

मुकदमों का विवरण

हरीलाल ई. टी. सी.

बनाम

मध्य प्रदेश राज्य (अब छत्तीसगढ़) (2011 की आपराधिक अपील संख्या 2216-2217)

05 सितंबर, 2023

[जे. बी. पारदीवाला और मनोज मिश्रा, जे. जे.] हेडनोट्स

विचार के लिए विषय: क्या उच्च न्यायालय को सत्र न्यायाधीश के आदेश को बरकरार रखने में न्यायसंगत ठहराया गया था जिसमें अपीलार्थियों को भारतीय दंड संहिता सी. की धारा 303 के तहत आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई थी।

दंड संहिता, **1860** -धारा. **303**-हत्या-अभियुक्त को यू/एस द्वारा दोषी ठहराया जाना।**302** और निचली अदालतों द्वारा आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई-दो अभियोजन पक्ष के गवाहों का नेत्रहीन विवरण कि मृतक पर हमला रात में हुआ था, हालांकि, उनमें से किसी ने भी प्राथमिकी दर्ज नहीं की, बल्कि अगले दिन पड़ोसी गांव के चौकीदार द्वारा एक नामित प्राथमिकी दर्ज की गई, भले ही वह एक चश्मदीद गवाह नहीं थी-सच्चाई:

आयोजित किया गया: निचली विचारण न्यायालय के साथ-साथ उच्च न्यायालय ने साक्ष्य की सराहना करते हुए विभिन्न पहलुओं को ठीक से संबोधित नहीं किया-न तो निचली विचारण न्यायालय और न ही उच्च न्यायालय ने गांव के चौकीदार के बयान पर ध्यान से विचार किया, जिसने एक नामित प्राथमिकी दर्ज की थी-दो चश्मदीद गवाह संयोग से गवाह थे-एक की गवाही उसके पिछले बयान से असंगत थी-हमले के कारण मौत के संबंध में उसका बयान अनिर्णायक है, इस प्रकार हत्या के लिए आरोपी को दोषी ठहराने के लिए उस पर भरोसा नहीं किया जा सकता है-दूसरे की गवाही ऐसी नहीं है कि यह अपने आप में हत्या के लिए आरोपी को दोषी ठहराने का आधार बन सकता है-इससे भी अधिक, यह अभियोजन पक्ष की कहानी में कई अंतराल छोड़ देता है-इसके अलावा, आरोपी से लाठी और कपड़ों की जब्ती को एक निर्णायक परिस्थिति के रूप में नहीं माना जा सकता है।

138 139

हरीलाल ई. टी. सी. बनाम. मध्य प्रदेश राज्य (अब छत्तीसगढ़)

गाँव की एक महिला के साथ उसकी कथित संलिप्तता के लिए मृतक-इस प्रकार, विभिन्न परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, अभियुक्त संदेह के लाभ का हकदार है-नीचे दी गई

अदालतों के निर्णय और आदेश को दरकिनार कर दिया जाता है।[पारस 14,16,18 और 19-26]

देरी/बाधा-एफ़. आई. आर.-एफ़. आई. आर. दर्ज करने में देरी-उचित स्पष्टीकरण का अभाव-अदालत का कर्तव्य:

आयोजित किया गया:अदालतों को सतर्क रहना चाहिए और अभियोजन पक्ष की कहानी में अलंकरण की संभावना को खारिज करने के लिए सबूतों का सावधानीपूर्वक परीक्षण करना चाहिए-देरी से विचार-विमर्श और अनुमान लगाने का अवसर मिलता है, विशेष रूप से जब रात में किसी खुले स्थान या सार्वजनिक सड़क पर किसी के भी घटना को नहीं देखने की उच्च संभावना होती है।[पैरा 19]

अन्य मामलों के विवरणों में आयातित आदेश और आवेदन आक्षेपित हैं

आपराधिक अपील न्यायनिर्णय:2011 की आपराधिक अपील सं. 2216-2217।

सी. आर. एल. ए. Nos.864 और 1991 के 865 में बिलासपुर में छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय के दिनांक 17.02.2010 के निर्णय और आदेश से

रूप:

डी. एन. गोबर्धन, वरिष्ठ अधिवक्ता, आकर्ष कामरा, सुश्री गौरी गोबर्धन, अधिवक्ता।अपीलार्थियों के लिए।

श्रीमती प्राची मिश्रा, ए. ए. जी., महेश कुमार, अमनप्रीत सिंह राही, निखिलेश कुमार, सुश्री देविका खन्ना, श्रीमती वी. डी. खन्ना, मैसर्स वी. एम. जेड. चैम्बर्स, एड.प्रत्यर्थियों के लिए।

सर्वोच्च निर्णय के निर्णय का निर्णय/आदेश

मनोज मिश्रा, जन्या.

1. ये दोनों अपीलें 1991 की आपराधिक अपील संख्या 864 और 865 में पारित बिलासपुर में छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय (संक्षेप में, "उच्च न्यायालय ") के एक सामान्य निर्णय और आदेश के खिलाफ निर्देशित की गई हैं, जिसमें हरिलाल और परसराम @रंगनाथ (इसमें अपीलकर्ता) की अपीलों को खारिज कर दिया गया था और तीसरे अतिरिक्त न्यायाधीश के आदेश को खारिज कर दिया गया था।

140

/

[2023] 12 एस सी आर।

सत्र न्यायाधीश, बिलासपुर, दिनांक 13.07.1991, 1990 के एस. टी. No.153 में पारित किया गया, जिसमें अपीलार्थियों को भारतीय दंड संहिता, 1860 (संक्षेप में, "आई. पी. सी".) की धारा 302 के अंतर्गत आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई।

परिचयात्मक तथ्य

2. तीन अभियुक्तों, नामतः अंशराम, परसराम उर्फ रंगनाथ और हरिलाल पर लगभग रात 8 बजे एल्लाहबादिया उर्फ विजय (मृतक) की हत्या करने का मुकदमा चलाया गया। प्राप्त जानकारी के आधार पर, श्रीमती द्वारा उपरोक्त तीन अभियुक्तों का नाम लेते हुए एक प्रथम सूचना रिपोर्ट (Ex.P-7) (संक्षेप में, "एफ़. आई. आर".) दर्ज की गई थी। जगमतीबाई (पीडब्लू-9) पी. एस. हिरी, जिला बिलासपुर (एम. पी.) में घटना के अगले दिन यानी लगभग 10 बजे।

26.08.1989 पर ही, जाँच की गई और पुलिस ने घटनास्थल से खून से सना मिट्टी/सादा मिट्टी एकत्र की और एक लाठी भी जब्त की, जो मृतक के शरीर के पास पड़ी थी। उसी दिन, पुलिस ने अंशराम के घर से लाठी, बनियां, लुंगी (कमर-कपड़ा) की खोज दिखाई। इसी तरह, परसराम के कहने पर उनके घर से लाठी और कपड़ों की खोज का खुलासा हुआ। तीसरे आरोपी हरिलाल को आई. डी. 1 पर गिरफ्तार किया गया था और उसी दिन कथित तौर पर उसके घर से एक लाठी और कपड़े बरामद किए गए थे। मृतक के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया था, जिसे डॉ. एस. के. दत्ता (पीडब्लू-8) 27.08.1989 पर 12.30 बजे। पीडब्लू-8 ने देखा कि निचले अंगों में कठोर मृत्यु मौजूद थी; अपघटन शुरू हो गया था; आंखें साकेट से बाहर निकलने के लिए मजबूर थीं; जीभ दांतों के बीच से निकल रही थी; होंठ सूजे हुए थे और उभरे हुए थे; पेट फैला हुआ था; लिंग और अंडकोश सूजे हुए थे; चेहरे और धड़ के सामने लाल तरल पदार्थ वाले कई त्वचा के फफोले देखे गए थे और मल पदार्थ निकल गए थे। शव के संबंध में पीडब्लू-8 अवलोकन इस प्रकार थे:-

शवपरीक्षण के दौरान बाहरी चोट:-

(i) बाएं अस्थायी क्षेत्र पर घाव 3.5cm x 2.5cm x 0.5cm; (ii) घाव 2.5cm x 1 सेमी बाएं कान के पिन्ना के केंद्र को विभाजित करता है। दोनों चोटें काली थीं और खून के काले थक्कों से घिरी हुई थीं।

(iii) बायीं जांघ के एक तिहाई ऊपरी हिस्से में तीन चोट:

141

हरीलाल ई. टी. सी. बनाम. मध्य प्रदेश राज्य (अब छत्तीसगढ़) [मनोज मिश्रा, जे.]

25 सेमी x 1 सेमी;

12 सेमी x 1 सेमी; और

7 सेमी x 1 सेमी।

जिसका रंग काला हो गया था।

आंतरिक परीक्षण:-

मस्तिष्क-स्थानीयकृत थक्के के रूप में बाएं लौकिक क्षेत्र में बाह्य रक्तस्राव जिसने अंतर्निहित मस्तिष्क को संपीड़ित और क्षीण कर दिया था। छाती-दोनों तरफ चौथी, पांचवीं, छठी, सातवीं और आठवीं पसलियों में फ्रैक्चर। फेफड़े-पूर्ववर्ती सतह पर दोनों फेफड़ों का संदूषण। फुफ्फुसीय गुहा में काले थक्के वाले रक्त होते थे।

हृदय-हृदय के दोनों कक्ष खाली थे।

मृत्यु का कारण-मस्तिष्क और फेफड़ों में चोटों के कारण आघात। अवधि: मृत्यु के बाद का समय **24 से 48 घंटे** है।

3. अभियोजन पक्ष ने 15 गवाहों से पूछताछ की। उन्हें निचली विचारण न्यायालय द्वारा मोटे तौर पर तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया था:- (i) घटना के चश्मदीद गवाह; (ii) घटना की जानकारी मिलने पर मौके पर पहुंचे गवाह; और (iii) जांच, चिकित्सा जांच, पूछताछ, जब्ती ज्ञापन, स्थल योजना तैयार करने आदि से संबंधित कार्यवाही को साबित करने वाले गवाह।

4. गवाहों की पहली श्रेणी इस प्रकार थी: पीडब्लू-1 (कन्हैया लाल); पीडब्लू-2 (सीताराम); पीडब्लू-3 (मोहनलाल); और पीडब्लू-6 (गणेश)। एक अन्य गवाह, पी. डब्ल्यू.-4 (रामानंद), जिसे एक व्यक्ति के रूप में स्थापित किया गया था, जो अपने बयान के दौरान घटना की सूचना मिलने पर मौके पर पहुंचा था, ने खुद को घटना के चश्मदीद गवाह के रूप में प्रस्तुत किया।

5. उपरोक्त श्रेणी के गवाहों में, पीडब्लू-1 को शत्रुतापूर्ण घोषित किया गया था। जब उनका सामना दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 (संक्षेप में, "संहिता") की धारा 161 के अंतर्गत दर्ज उनके पिछले बयान से किया गया, तो उन्होंने कहा कि पुलिस ने जबरन उनका बयान लिया था, हालांकि उन्होंने इस घटना को नहीं देखा था। नतीजतन, निचली विचारण न्यायालय ने अभियोजन पक्ष को कोई लाभ नहीं होने की उसकी गवाही पाई। पीडब्लू-3 को निचली विचारण न्यायालय ने अविश्वसनीय बताते हुए खारिज कर दिया था क्योंकि वह इस दौरान दिए गए अपने बयान से असंगत पाया गया था।

/

[2023] 12 एस सी आर।

जाँच का क्रम। पीडब्लू-4, जिसने न्यायालय में जाँच के दौरान पहली बार खुद को एक चश्मदीद गवाह होने का दावा किया था, को भी विश्वसनीय नहीं पाया गया क्योंकि वह भी जाँच के दौरान दर्ज किए गए अपने पिछले बयान से असंगत था। इस प्रकार, घटना के केवल दो चश्मदीद गवाहों, अर्थात् पीडब्लू-2 और पीडब्लू-6 पर निचली विचारण न्यायालय द्वारा कुछ विस्तार से चर्चा की गई थी।

6. निचली विचारण न्यायालय ने देखा कि हालांकि पीडब्लू-2 (सीताराम) ने आरोपी हरिलाल के खिलाफ अभियोजन मामले का समर्थन किया, लेकिन उन्होंने अन्य दो अभियुक्तों, अर्थात् अंशराम और परसराम का नाम नहीं लिया। हालाँकि, पी. डब्ल्यू.-6, जिसने तीनों अभियुक्तों को फंसाया था, उसे निचली विचारण न्यायालय ने पूरी तरह से विश्वसनीय पाया। इसलिए, उसकी गवाही पर भरोसा करते हुए, निचली विचारण न्यायालय ने तीनों अभियुक्तों को दोषी ठहराया। ऐसा करते समय, निचली विचारण न्यायालय ने पाया कि पीडब्लू-6 की गवाही चिकित्सा साक्ष्य के साथ-साथ आरोपी के कहने पर खून से सने लाठी और कपड़ों की खोज की परिस्थिति से भी विधिवत पुष्टि करती है।

7. उनकी दोषसिद्धि से व्यथित होकर, तीन अलग-अलग अपीलों का नेतृत्व तीन अभियुक्तों में से प्रत्येक ने किया। 1991 की आपराधिक अपील संख्या 866, जिसे अंशराम ने पेश किया था, अपील के लंबित रहने के दौरान उनकी मृत्यु के परिणामस्वरूप समाप्त हो गई। जबकि, अन्य दो अपीलें, अर्थात् 1991 की आपराधिक अपील संख्या 864 और 1991 की 865, अपीलार्थियों के वर्तमान समूह के नेतृत्व में उच्च न्यायालय द्वारा आक्षेपित निर्णय और आदेश द्वारा खारिज कर दी गई थीं। 8. हमने अपीलार्थियों की ओर से विद्वान वरिष्ठ वकील श्री डी. एन. गोबर्धन को सुना है। और सुश्री प्राची मिश्रा, छत्तीसगढ़ राज्य की अतिरिक्त महाधिवक्ता हैं।

अपीलार्थियों के स्वयं के बारे में सुझाव

9. अपीलार्थियों के विद्वान वकील ने प्रस्तुत किया कि घटना देर शाम/रात की है जबकि अगले दिन सुबह 10 बजे प्राथमिकी दर्ज की गई थी, जो इस तथ्य का संकेत है कि किसी ने भी घटना नहीं देखी और विचार-विमर्श के बाद प्राथमिकी दर्ज की गई और उसके बाद अभियोजन पक्ष की कहानी विकसित हुई; अन्यथा भी, पीडब्लू-2 और पीडब्लू-6 की गवाही निम्नलिखित कारणों से अविश्वसनीय है:

(i) पीडब्लू-2 खापरी गाँव का निवासी है, जबकि घटना कोहरोदा गाँव में हुई। पीडब्लू-2 के अनुसार, वह शाम को टेलीविजन देखने के लिए कोहरोदा गया था। वहाँ उन्होंने इस घटना को देखा। जिसके बाद वह गाँव से चला गया और शाम को ही उसने श्रीमती को सूचित किया। जुगमतीबाई (पीडब्लू-9), एक कोटवारिन (गाँव 143)

हरीलाल ई. टी. सी. बनाम. मध्य प्रदेश राज्य (अब छत्तीसगढ़) [मनोज मिश्रा, जे.] 144

घटना के बारे में गाँव का चौकीदार)। हालाँकि, पीडब्लू-9 ने कहा कि उन्हें किसी भी व्यक्ति द्वारा सूचित नहीं किया गया था जिसने इस घटना को देखा होगा। अपीलार्थियों के वकील के अनुसार, यह पीडब्लू-2 की विश्वसनीयता को गंभीर रूप से कम करता है। इसके अलावा, पीडब्लू-2 ने केवल हरिलाल के नाम का खुलासा किया। इसके अलावा, पीडब्लू-2 में यह नहीं कहा गया है कि मृतक पर इस हद तक हमला किया गया था कि उसकी मृत्यु हो गई होगी, या उसे लगी चोटों के कारण उसकी मृत्यु हो गई होगी। (ii) पीडब्लू-6 जाँच के दौरान दिए गए अपने पिछले बयान के अनुरूप नहीं है, क्योंकि जाँच के दौरान उसने खुलासा किया कि आरोपी ने मृतक पर डंडों

(डंडा) से हमला किया था, लेकिन न्यायालय में अपने बयान में उसने कहा कि आरोपी ने मृतक पर लाठी से हमला किया था। लाठी डंडा की तुलना में बहुत मोटी और भारी होती है। इसके अलावा, पीडब्लू-6 इस कारण के संबंध में सुसंगत नहीं था कि वह घटना को देखने के लिए अपने घर से बाहर क्यों आया था। न्यायालय में अपने बयान में उन्होंने कहा था कि-घटना के समय वह अपने घर में थे; वह आरोपी परसराम की मां द्वारा उठाए गए खतरे पर बाहर आए कि एलाहाबादिया उर्फ विजय (यानी मृतक) अपने बेटे परसराम को पीट रहा था, जो जांच के दौरान दिए गए उनके पिछले बयान से असंगत था, जिसमें उन्होंने कहा था कि वह गली (गली) में एक फाईघाट की तेज आवाज सुनकर बाहर आए थे। इसके अलावा, पीडब्लू-6 ने खुलासा किया कि घटना अंशराम के घर के सामने हुई, जबकि मृतक का शव एक मंदिर के पास मिला, जो अंशराम के घर से काफी दूर था। अन्यथा भी, पीडब्लू-6 ने रिपोर्ट दर्ज करने या गाँव के लोगों को सूचित करने का कोई प्रयास नहीं किया। उनका यह आचरण उनकी गवाही में विश्वास को प्रेरित नहीं करता है।

10. वैकल्पिक रूप से, यह प्रस्तुत किया गया था कि अभियोजन पक्ष के गवाहों की गवाही से यह एक ऐसा मामला प्रतीत होता है जहां एक सड़क पर हमला हुआ था। इस तरह के सड़क निर्माण का कारण और उद्देश्य स्पष्ट नहीं है सिवाय इसके कि एक महिला के संबंध में कुछ विवाद था। इसलिए, उपयोग किए गए हथियारों की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए, यह धारा 300 आई. पी. सी. के अपवादों में से एक के अंतर्गत आने वाला मामला होगा। इसलिए धारा 304 भाग-I आई. पी. सी. के अंतर्गत दोषसिद्धि न्याय के उद्देश्यों को पूरा करेगी और उनकी सजा को पहले से ही सजा की अवधि तक कम किया जा सकता है क्योंकि दोनों जीवित आरोपी हैं।

/

[2023] 12 एस सी आर।

(अपीलार्थी) ने मुकदमे/अपील के दौरान 10 साल से अधिक की सजा काट ली है।

राज्य के स्वयं के बारे में टिप्पणियां

11. इसके विपरीत, राज्य के विद्वान वकील ने प्रस्तुत किया कि पीडब्लू-9 (यानी मुखबिर) ने बयान दिया था कि ग्रामीणों ने पूरी रात शव की रखवाली की और अगले दिन सुबह प्राथमिकी दर्ज की गई। इन परिस्थितियों में, यह नहीं कहा जा सकता है कि एफ. आई. आर. में देरी हुई है और इसलिए यह मनगढ़ंत है। पीडब्लू-2 एक स्वाभाविक गवाह है, जो लौटते समय घटना को देखता है और सूचना देने वाले को सूचित करता है। भले ही पीडब्लू-2 ने अपने बयान में तीनों अभियुक्तों का नाम नहीं लिया हो, लेकिन उसका बयान पीडब्लू-6 की गवाही की पुष्टि करता है कि जिस तरह से आरोपी द्वारा मृतक पर हमला किया गया था। पीडब्लू-6 की गवाही तीनों अभियुक्तों को प्रेरित करती है और चिकित्सा साक्ष्य के अनुरूप है। इसके अलावा, उनकी जिरह से ऐसा कुछ भी सामने नहीं आया है जो आरोपी व्यक्तियों को गलत तरीके से फंसाने के लिए उन पर किसी भी अनुचित उद्देश्य का आरोप लगाता हो। इस प्रकार, कथित गवाहों पर अविश्वास

करने का कोई उचित कारण नहीं है, विशेष रूप से जब निचली न्यायालय और अपीलीय न्यायालय ने रिकॉर्ड पर अन्य सामग्रियों/साक्ष्यों के आधार पर परीक्षण करने के बाद उनकी गवाही पर भरोसा किया है। उसने यह भी तर्क दिया कि पीडब्लू-2 और पीडब्लू-6 द्वारा प्रस्तुत ऑक्युलर खाते की पुष्टि आरोपी के कहने पर लाठी और कपड़ों की खोज की परिस्थिति से होती है और सीरोलॉजिस्ट रिपोर्ट में उस पर रक्त की उपस्थिति की पुष्टि की गई है।¹² इस तर्क के जवाब में कि अभियुक्त की दोषसिद्धि को भारतीय दंड संहिता सी. की धारा 302 के अंतर्गत दंडनीय से धारा 304 भाग-1 के अंतर्गत एक में बदला जा सकता है, राज्य के विद्वान वकील ने कहा कि मृतक के शरीर पर पाए गए घावों से पता चलता है कि उसे बेरहमी से पीटा गया था। चिकित्सीय साक्ष्य इंगित करते हैं कि न केवल सिर में चोटें थीं, बल्कि पसलियों में भी फ्रैक्चर था; वह भी दोनों तरफ। इसके अलावा, अभियुक्त व्यक्तियों द्वारा आई. पी. सी. की धारा 300 के किसी भी अपवाद के अंतर्गत अपने मामले को लाने के लिए कोई याचिका नहीं ली गई थी। इसलिए, अभियुक्तों को धारा 302 आई. पी. सी. के अंतर्गत दंडनीय अपराध के लिए उचित रूप से दोषी ठहराया गया है और अपील में योग्यता का अभाव है।

चर्चा और विश्लेषण

13. हमने प्रतिद्वंद्वी प्रस्तुतियों पर विचार किया है और रिकॉर्ड का अध्ययन किया है।

14. इस मामले में, हम रिकॉर्ड से देखते हैं कि निचली विचारण न्यायालय के साथ-साथ उच्च न्यायालय ने साक्ष्य की सराहना करते हुए 145 को ठीक से संबोधित नहीं किया है

हरीलाल ई. टी. सी. बनाम. मध्य प्रदेश राज्य (अब छत्तीसगढ़) [मनोज मिश्रा, जे.]

विभिन्न पहलू, अर्थात् (क) अभियुक्त के खिलाफ कोई स्पष्ट उद्देश्य साबित नहीं हुआ है सिवाय इसके कि गाँव की एक महिला के संबंध में कुछ घटना हुई थी; (ख) पीडब्लू-2 और पीडब्लू-6 दोनों में कहा गया है कि मृतक पर अभियुक्त व्यक्तियों में से एक के घर के सामने हमला किया गया था, जिसका नाम आश्रम है, लेकिन, स्थल योजना (उदा. पी-21/पी-22) आश्रम के घर का खुलासा नहीं करता है और स्थल योजना के साथ-साथ पीडब्लू-6, पीडब्लू-9 (मुखबिर) और पुलिस गवाहों की गवाही से यह स्पष्ट है कि मृतक का शव उस स्थान से लगभग 300 फीट दूर एक मंदिर के पास पाया गया था जहाँ मृतक पर कथित रूप से हमला किया गया था; शव वहाँ कैसे पहुंचा, नेत्र विवरण में कोई स्पष्टीकरण नहीं है, हालांकि जांच अधिकारी द्वारा कुछ खिंचाव के निशान देखे गए थे; (सी) जब्ती ज्ञापन (एक्स) के अनुसार पी-13), अन्य वस्तुओं के अलावा, पुलिस द्वारा उस स्थान से एक लाठी जब्त की गई थी जहाँ शव पड़ा था-जिसकी लाठी थी, अभियोजन पक्ष का सबूत चुप है; (डी) लेख यानी। हालांकि आरोपी के कहने पर जब्त लाठी और कपड़े खून से सने थे, सीरोलॉजिस्ट रिपोर्ट में इसकी उत्पत्ति का पता नहीं चल सका; और (ई) पीडब्लू-2 एक कहानी स्थापित करता है कि उसने पीडब्लू-9 को घटना सुनाई, लेकिन पीडब्लू-9, जो पड़ोसी गांव का कोटवारिन (गांव चौकीदार) है, कहता है कि उसे किसी चश्मदीद गवाह ने सूचित नहीं किया था, बल्कि वह हंगामे की प्रतिक्रिया के रूप में मौके पर

पहुंची थी। ये सभी पहलू भौतिक थे क्योंकि ये गाँव की एक महिला से संबंधित किसी घटना के कारण मृतक पर भीड़ की हिंसा का संकेत थे। 15. उपरोक्त पहलुओं को ध्यान में रखते हुए, अब हम यह परीक्षण करने के लिए अभियोजन पक्ष के साक्ष्य की सावधानीपूर्वक जांच करेंगे कि क्या यह विश्वास को प्रेरित करता है और अभियुक्त के खिलाफ आरोप को उचित संदेह से परे साबित करने में सफल होता है। 16. इससे पहले कि हम घटना के दो भौतिक चश्मदीद गवाहों (यानी पीडब्लू-2 और पीडब्लू-6) की गवाही का विश्लेषण करने के लिए आगे बढ़ें, ध्यान देने योग्य बात यह है कि पीडब्लू-2 और पीडब्लू-6 के नेत्र विवरण के अनुसार, मृतक पर हमला 25.08.1989 के शाम 7 बजे से रात 8 बजे के बीच हुआ था। हालांकि, न तो पीडब्लू-2 और न ही पीडब्लू-6 ने प्राथमिकी दर्ज की। बल्कि, पड़ोसी गाँव खारपी के पीडब्लू-9 यानी कोटवारिन (गाँव चौकीदार) द्वारा सुबह 10 बजे 26.08.1989 पर एक नामित एफ़. आई. आर. दर्ज की गई, भले ही वह एक चश्मदीद गवाह न हो। इन परिस्थितियों में, पीडब्लू-9 का बयान उसकी जानकारी के स्रोत का पता लगाने के लिए महत्वपूर्ण है। दुर्भाग्य से, न तो निचली विचारण न्यायालय और न ही उच्च न्यायालय ने पीडब्लू-9 के बयान पर सावधानीपूर्वक विचार किया है।

17. पीडब्लू-9 ने अपने बयान में कहा कि वह गाँव खारपी की कोटवारिन और गाँव कोहरोडा (यानी, जिस स्थान पर घटना हुई थी) की कोटवार है।

/

[2023] 12 एस सी आर।

हुआ) कोई और व्यक्ति है। एलाहाबादिया @विजय (मृतक) उनके गाँव का निवासी था। घटना की रात, लगभग 9 बजे, जब वह अपने गाँव का चक्कर लगा रही थी, तो उसने गाँव कोहरोडा से आने वाली तेज़ आवाज़ें सुनीं। साथी ग्रामीण लुलवा और सुधवा ने पीडब्लू-9 को गाँव कोहरोडा जाने के लिए कहा। जब वह गाँव कोहरोडा गई, तो उसने रूपाऊ मंदिर के पास एलाहाबादिया का शव पड़ा देखा। शव को वहाँ रखने के बाद, वह कोहरोडा के गाँव चौकीदार को सूचित करने गई, उसे जगाया और उसे उस स्थान पर ले आई जहाँ शव पड़ा था। इसके बाद, ग्रामीणों की मदद से रात भर शव की रखवाली की गई और अगले दिन सुबह, पी. एस. हिरी में प्राथमिकी दर्ज की गई।

जिरह के दौरान, पीडब्लू-9 ने विशेष रूप से कहा कि उसे किसी भी व्यक्ति द्वारा सूचित नहीं किया गया था कि उसने मृतक को पीटे जाते देखा था। उसने यह भी स्पष्ट रूप से कहा कि न तो परसराम और न ही सीताराम उसे घटना के बारे में सूचित करने आए।

18. पीडब्लू-9 का कथन कई कारणों से महत्वपूर्ण है। पहला, पीडब्लू-2 ने उसे रात की घटना के बारे में सूचित नहीं किया जैसा कि पीडब्लू-2 ने अपने बयान में आरोप लगाया है; दूसरा, मृतक का शव मंदिर के पास मिला और रात भर वहाँ रखा गया था; और तीसरा, अगर किसी ने पीडब्लू-9 को घटना के बारे में नहीं बताया था, तो एक नामित प्राथमिकी क्यों दर्ज की गई थी।

19. हालाँकि पी. डब्ल्यू.-9 से एफ़. आई. आर. दर्ज करने में देरी के संबंध में कोई विशेष प्रश्न नहीं पूछा गया होगा, लेकिन इस तथ्य को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है कि एफ़. आई. आर. में देरी हुई थी। जब एक एफ़. आई. आर. में देरी होती है, तो उचित स्पष्टीकरण के अभाव में, अदालतों को सतर्क रहना चाहिए और अभियोजन पक्ष की कहानी में अलंकरण की संभावना को खारिज करने के लिए सबूतों का सावधानीपूर्वक परीक्षण करना चाहिए, क्योंकि देरी से विचार-विमर्श और अनुमान लगाने का अवसर मिलता है। इससे भी अधिक, ऐसे मामले में जहां घटना को देखने वाले किसी व्यक्ति की संभावना अधिक नहीं है, जैसे कि किसी खुली जगह या सार्वजनिक सड़क पर रात की घटना के मामले में।

20. उपरोक्त सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए, जब हम पीडब्लू-9 की गवाही के भार के खिलाफ पीडब्लू-2 के बयान का परीक्षण करते हैं, तो पीडब्लू-2 का बयान कि घटना को देखने के बाद, वह मौके से चला गया और सूचित किया कि पीडब्लू-9 स्वीकृति के योग्य नहीं लगता है। इसके अलावा, पीडब्लू-2 तीनों अभियुक्तों को शामिल नहीं करता है। वह केवल हरिलाल को पढ़ाता है। इस संबंध में, पीडब्लू-2 अपने पिछले बयान से असंगत है क्योंकि अपने पिछले बयान में, जिसके साथ उनका सामना किया गया था, उन्होंने तीनों अभियुक्तों को शामिल किया था, जबकि न्यायालय में अपने बयान में उन्होंने कहा था कि उन्होंने 147 नहीं कहा था

हरिलाल ई. टी. सी. बनाम. मध्य प्रदेश राज्य (अब छत्तीसगढ़) [मनोज मिश्रा, जे.] 148

जाँच अधिकारी के सामने कि अंशराम और हरिलाल दोनों मृतक पर हमला कर रहे थे। इसके अलावा, पीडब्लू-2 मृतक पर हमले की गंभीरता का खुलासा नहीं करता है। वह यह नहीं कहता कि मृतक उस पर लगे प्रहारों से गंभीर रूप से घायल हो गया था। इसलिए, हमले को मौत का कारण मानने के संबंध में उनका बयान अनिर्णायक है। बल्कि, यह इस संभावना के लिए जगह छोड़ता है कि जिस हमले को उसने देखा वह मृतक पर गाँव की एक महिला के साथ उसकी संलिप्तता के बारे में भीड़ के हमले की शुरुआत थी। इससे भी अधिक, जब मृतक का शव उस स्थान से 300 फीट दूर पाया गया जहां मृतक पर कथित रूप से हमला किया गया था। इसके अलावा, मृतक पर हमला करने वाले व्यक्तियों की संख्या के संबंध में पीडब्लू-2 का बयान अनिर्णायक प्रतीत होता है। उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए और इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि पीडब्लू-2 एक संयोग गवाह है, न कि उस गाँव का निवासी जहां घटना हुई थी, और उसका बयान उसके पिछले बयान से असंगत था, हमारे विचार में, हत्या के अपराध के लिए आरोपी को दोषी ठहराने के लिए पीडब्लू-2 पर भरोसा करना असुरक्षित होगा।

21. जहां तक पीडब्लू-6 का संबंध है, वह भी एक संयोग गवाह है, क्योंकि जब मृतक पर हमला शुरू हुआ तो वह मौके पर मौजूद नहीं था। उनके अनुसार, वह इस घटना को देखने के लिए बाहर आया जब एक आरोपी परसराम की मां ने शोर मचाया कि एलाहाबादिया (मृतक) उसके बेटे को पीट रहा है। पीडब्लू-6 के अनुसार, जब वह बाहर आया तो उसने तीनों अभियुक्तों को अंशराम के घर के सामने मृतक पर लाठी से हमला करते देखा। उन्होंने यह नहीं बताया कि मृतक हथियारबंद था और उसने आरोपी पर हमला किया था। पीडब्लू-6 का यह बयान कि वह आरोपी परसराम

की मां द्वारा चेतावनी दिए जाने पर घटना को देखने के लिए बाहर आया था कि उसके बेटे को एलाहाबादिया (मृतक) द्वारा पीटा जा रहा है, जांच के दौरान दिए गए उसके पिछले बयान से असंगत है, जिसके साथ उसका सामना किया गया था, जिसमें उसने कहा था कि वह अंशराम के घर के सामने सड़क से आने वाली तेज आवाजों को सुनकर बाहर आया था। उनका पिछला बयान मृतक पर भीड़ के हमले का प्रतिबिंब है, जिसकी पुष्टि पीडब्लू-6 के आचरण से होती है, क्योंकि पीडब्लू-6 के अनुसार, घटना को देखने के बाद, पीडब्लू-6 घटना के बारे में किसी को बताए बिना चला गया और तभी वापस आया जब सभी ग्रामीण मृतक के शव के पास रूपाऊ मंदिर में इकट्ठा हुए। इसमें कोई संदेह नहीं है कि अलग-अलग लोग किसी भी स्थिति के लिए अलग-अलग प्रतिक्रिया देते हैं। लेकिन अगर यह वास्तव में सड़क पर घूमते हुए कुछ लोगों के बीच का मुद्दा होता, तो समस्याओं को हल करने के लिए लोगों को इकट्ठा करना मानव आचरण का स्वाभाविक तरीका होता। हालाँकि, जहाँ आम तौर पर ग्रामीण, और कोई नहीं

/

[2023] 12 एस सी आर।

विशेष ग में, एक महिला के साथ उसकी संलिप्तता के आरोपी व्यक्ति पर हमला करना, दर्शकों के लिए हस्तक्षेप नहीं करना काफी स्वाभाविक है।

22. उपरोक्त के अलावा, महत्वपूर्ण बात यह है कि अगर पीडब्लू-6 बाद में मौके पर पहुंच गया होता, जब अन्य ग्रामीण मृतक के शव के पास जमा हो गए होते, तो वह पीडब्लू-9 को आरोपी के दोष के बारे में सूचित कर सकता था, लेकिन पीडब्लू-9 ने अपने बयान में स्पष्ट रूप से कहा है कि किसी ने भी उसे अपराध के अपराधी के बारे में सूचित नहीं किया था।

23. इसके अलावा, पीडब्लू-6 इस बात का कोई संकेत नहीं देता है कि मृतक के शव को उस स्थान से मंदिर के पास कैसे लाया गया, जहां उस पर कथित रूप से हमला किया गया था, यानी आश्रम के घर के सामने। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि उनके बयान के पैराग्राफ 4 में, पीडब्लू-6 स्पष्ट रूप से बताता है कि जिस मंदिर में शव मिला था और जिस स्थान पर मृतक पर हमला किया गया था, उसके बीच की दूरी 300 फीट है। उपरोक्त सभी कारणों से, हम पीडब्लू-6 की गवाही को इस तरह के उत्कृष्ट गुण का नहीं मानते हैं कि यह अपने आप में हत्या के अपराध के लिए आरोपी को दोषी ठहराने का आधार बन सकता है। इससे भी अधिक, क्योंकि यह अभियोजन पक्ष की कहानी में कई अंतराल छोड़ता है, अर्थात्, शव मंदिर के पास कैसे आया और मृतक के शव के पास एक लाठी क्यों छोड़ी गई, जब पुलिस की कहानी के अनुसार, तीनों हमलावर अपनी-अपनी लाठियों के साथ चले गए थे, जो बाद में उनके कहने पर खोजे गए थे।

24. उपरोक्त चर्चा के आलोक में, हमारा विचार है कि अभियोजन पक्ष अपराध की उत्पत्ति के साथ-साथ हत्या के तरीके और किसके द्वारा की गई, को भी विश्वसनीय रूप से साबित करने में सक्षम नहीं है, क्योंकि अभियोजन पक्ष के नेतृत्व में साक्ष्य इस बात की प्रबल संभावना को जन्म देता है कि हत्या मृतक पर गाँव की एक महिला के साथ कथित संलिप्तता के लिए भीड़ की

कार्रवाई का परिणाम थी। इस प्रकार, यह ध्यान में रखते हुए कि यह रात की घटना का मामला था, मृतक का शव एक मंदिर के पास एक खुली जगह पर मिला था; एक नामित प्राथमिकी उस जगह के किसी भी ग्रामीण द्वारा दर्ज नहीं की गई थी जहां मृतक पर हमला किया गया था, बल्कि पीडब्लू-9 यानी पड़ोसी गांव के चौकीदार द्वारा दर्ज की गई थी, जो स्वीकार करता है कि किसी भी चश्मदीद ने उसे सूचित नहीं किया था; और शव उस जगह से 300 फीट की दूरी पर पाया गया था जहां मृतक पर कथित रूप से हमला किया गया था, हमारा विचार है कि यह एक ऐसा मामला है जहां आरोपी संदेह के लाभ के हकदार हैं।

25. इस स्तर पर, हम देख सकते हैं कि हालांकि अभियोजन पक्ष ने अभियुक्तों के कहने पर लाठियों और कपड़ों की जब्ती पर भरोसा किया था, लेकिन ये 149

हरीलाल ई. टी. सी. बनाम. मध्य प्रदेश राज्य (अब छत्तीसगढ़) [मनोज मिश्रा, जे.]

दोषपूर्ण परिस्थितियों से इनकार किया गया है और सीरोलॉजिस्ट रिपोर्ट उस पर पाए गए रक्त के दाग की उत्पत्ति का पता नहीं लगा सकी है। इसके अलावा मृतक के शव के बगल में एक लाठी मिली। इस लाठी से ही मृतक के शरीर पर चोट लग सकती थी। लाठी की अस्पष्ट उपस्थिति महत्वपूर्ण है, जबकि अभियोजन पक्ष का मामला यह नहीं है कि मृतक ने आत्मरक्षा में लाठी का इस्तेमाल किया था। उपरोक्त सभी कारणों से, हम अभियुक्त से लाठी और कपड़ों की जब्ती को एक निर्णायक परिस्थिति के रूप में नहीं मानते हैं जो दोषसिद्धि की गारंटी देता है।

26. तदनुसार अपीलों की अनुज्ञात जाती है। उच्च विचारण न्यायालय के साथ-साथ विचारण विचारण न्यायालय के निर्णय और आदेश भी साथ-साथ निर्धारित किए जाते हैं। अपीलार्थियों को उस आरोप से बरी कर दिया जाता है जिसके लिए उन पर मुकदमा चलाया गया है। बताया जाता है कि इस अपील के लंबित रहने के दौरान अपीलार्थियों को जमानत पर रिहा कर दिया गया था। उनके जमानत बांड जारी कर दिए जाते हैं। उन्हें आत्मसमर्पण करने की आवश्यकता नहीं है। यदि वे जमानत पर नहीं हैं तो उन्हें किसी अन्य मामले में वांछित न होने पर तुरंत रिहा किया जाएगा।

द्वारा तैयार किए गए हेडनोटः

अपीलों की अनुज्ञात गई।

निधि जैन